पाठ्य-सामग्री

एम० ए० (हिंदी) प्रथम वर्ष

भारतीय काव्यशास्त्र, (पत्र-5)

‘रीति’

प्रो. भूपेंद्र कलसी

समन्वयक

भारतीय भाषा विभाग

नालंदा खुला विश्वविद्यालय, नालंदा

रीति

शब्द विन्यास को रीति कहते हैं।

रीति शब्द का अर्थ है मार्ग। वह मार्ग या पद्धति जिसमें काव्य के अंतर्गत शब्द-विन्यास की कला बताई जाए, रीति कहलाती है। जैसे शरीर में अंग-विन्यास का महत्त्व है वैसे ही काव्य में शब्द-विन्यास का। जो अंग जहाँ, जैसा होना चाहिए वहाँ, वैसा हो तभी वह शोभता है; आँख की जगह कान हो जाए, आदमी का कान हाथी के कान के जैसा हो जाए तो उससे सौंदर्य बढ़ने के बदले घट जाएगा। इसी तरह जहाँ, जैसा शब्द-प्रयोग उचित हो वहाँ वैसा होने पर ही काव्य सुंदर प्रतीत होता है। रीति का प्रमुख आधार समास है।

रीतियाँ तीन हैं:

1. वैदर्भी
2. गौड़ी
3. पांचाली

1. वैदर्भी

माधुर्य-व्यंजक वर्ण; समास का अभाव अथवा समास की अल्पता। (वैदर्भी रीति को उपनागरिका वृत्ति भी कहते हैं।)

जैसे-

मृदु मंद-मंद मंथर-मंथर,

लघु तरनि हंसिनी-सी सुंदर,

तिर रही खोल पालों के पर

-पंत

2. गौड़ी

ओज-व्यंजक वर्ण; समास का बाहुल्य। (गौड़ी रीति को परुषा वृत्ति भी कहते हैं।)

जैसे-

राघव-लाघव-रावण-वारण-गत युग्म-प्रहर,

उद्धत-लंकापति-मर्दित-कपि-दल-बल-विस्तर।

-निराला

3. पांचाली

वैदर्भी और गौड़ी की मध्य स्थिति वाली रचना; समास चार-पाँच शब्दों में। (पांचाली रीति को कोमल वृत्ति भी कहते हैं।)

जैसे-

गुरु-पद-रज मृदु मंजुल अंजन।

नयन-अमिय दृग दोष-विभंजन।।

-तुलसीदास

***